अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 22.12.2016

पांचवां वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ : निर्जरा, बंध और मोक्ष – 50

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 16

(निर्जरा : किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें)

(क) आयतंरात्वा प्रत्यागता गोचराग्र किसे कहते हैं?

(ख) अपरिकर्म अनशन से क्या तात्पर्य है? व इसका पर्यायवाची शब्द लिखें।

(ग) भाव अवमोदरिका से आप क्या समझते हैं?

(घ) शुक्ल ध्यान की प्रथम दो अनुप्रेक्षाएं अर्थ सहित लिखिए।

(ङ) रौद्र ध्यान के लक्षण अर्थ सहित लिखें।

(च) सुश्रुषा विनय के प्रथम पांच प्रकार अर्थ सहित लिखें।

(बंध : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें)

(छ) कर्म स्कन्ध का ग्रहण जीव किसी एक प्रदेश से करता है या सर्वात्मना करता है?

(ज) द्रव्यबंध व भावबंध को उदाहरण सहित समझाऐं।

(झ) मोहनीय व आयुष्य कर्म का अबाधा व निषेक काल लिखें।

(मोक्ष : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें)

(ञ) मोक्ष के अभिवचन में 'बुद्ध' का क्या अर्थ है?

(ट) सर्व सिद्धों के सुख समान क्यों हैं?

(ठ) सिद्धों का निवास कहाँ है?

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें – 10

(क) निर्जरा – आश्रव, संवर और निर्जरा कौन–कौन से भाव हैं? 'अथवा' भिक्षाचर्या के भेदों में से सात एषणाओं को वर्णित करें।

(ख) बंध और मोक्ष – कर्म जीव को किस प्रकार पराधीन बनाता है? 'अथवा' सिद्ध जीव की अवगाहना कितनी होती है?

प्र.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें – 24

(क) निर्जरा – तीन निर्मल भाव कौन–कौन से हैं? स्पष्ट करें। 'अथवा' मिथ्यात्वी की निर्जरा के सम्बन्ध में आचार्य भिक्षु का अभिमत क्या है?

(ख) बंध और मोक्ष – कौन से गुणस्थान में कौनसे बन्ध हेतु विद्यमान रहते हैं? 'अथवा' कर्मों के सम्पूर्ण क्षय की प्रक्रिया लिखें।

अवबोध – (तप धर्म से बंध व विविध तक) – 30

प्र.4 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए – 18

(क) व्युत्सर्ग किसे कहते हैं? तथा द्रव्य व्युत्सर्ग के कितने प्रकार हैं? नाम लिखें।

(ख) पांच ही भावों का कितने कर्मों से सम्बन्ध है?

(ग) पुरुषार्थ को करण क्यों कहा गया है?

(घ) निधत्ति व निकाचित में क्या अंतर है?

(ङ) जीव के कितनी क्रियाएँ होती हैं?

(च) आत्म प्रदेश अधिक है या कर्म प्रदेश?

(छ) क्या कर्म के अशुभ फल को रोका जा सकता है?

(ज) क्या छद्मस्थ अकषायी होता है?

(झ) क्या चौदहवें गुणस्थान में जीव कर्म मुक्त हो जाता है?
(ञ) सन्निपातिक भाव कैसे निष्पन्न होते हैं?
(ट) पांच ही भावों का कितने कर्मों से सम्बन्ध है?

प्र.5 कोई दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखें – 12

(क) क्या भाव शुभ–अशुभ दोनों हैं?
(ख) कर्म वर्गणा का बंध होता है, वे एक कर्म से संबंधित होती है, या आठों कर्मों से तथा बंधने वाली कर्म वर्गणाएं क्या आठों कर्मों में समान रूप में विभक्त होती हैं या न्यूनाधिक?
(ग) क्या शुभ–अशुभ कर्म का बंध युगपत होता है? एवं शुभ कर्म को कैसे तोड़ा जा सकता है?
(घ) क्षेत्र करण किसे कहते हैं तथा एक कर्म की वर्गणा अधिकतम कितने भव तक भोगी जा सकती है?

श्रावक संबोध – 20

प्र.6 कोई चार पद्य लिखें – 12

(क) पूणिया श्रावक के गौरवमय आख्यान वाला पद्य लिखें।
(ख) 'चैन है बैचेन' वाला पद्य लिखें।
(ग) श्रावक सचेत.....अपनी संजोते।
(घ) स्वर्ण कंकण मुद्रिका वाला पद्य लिखें।
(ङ) अस्ति नास्ति वाला पद्य लिखें।
(च) रेवती सती ने अपने जीवन में घन्यता का अनुभव किया, वह पद्य लिखें।

प्र.7 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) त्रिपदिका का सार क्या है?
(ख) पुद्गल परावर्त्तन किसे कहते हैं?
(ग) सहायानपेक्षी किसे कहते हैं?
(घ) 'अणगहा णं पासए परिहरेज्जा' का भावार्थ क्या है?
(ङ) शंख के प्रति शिकायत भरे भाव देखकर भगवान ने पोक्खलि आदि श्रावकों से क्या कहा?
(च) वे कौन से पांच तात्त्विक और संघीय गीत हैं, जिन्हें कंठस्थ कर हमें उनका स्वाध्याय करना चाहिए।